दैनिक नवज्योति Nagaur - 17 Mar 2021 - Page 7

जैविक जीरा उत्पादन कर कमाएं मुनाफा

अम्बुजा सीमेंट फाउंडेशन के तत्त्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

न्यूज सर्विस/नवज्योति, मूण्डवा

अम्बुजा सीमेंट फाउंडेशन मारवाड़ मूण्डवा में मंगलवार को बिना कीटनाशी के जीरा उत्पादन डीएएसडी प्रयोजना के हितधारकु (स्टेकहोल्डर) के साथ कार्यशाला के आयोजन किया गया।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि डॉ. एस.एन. सक्सेना डायरेक्टर एनआरसीएसएस अजमेर ने ईनाणा गांव में चल रहे कार्यक्रम बिना कीटनाशी के जीरा उत्पादन में किसानों द्वारा किये जा रहे कार्य कि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उत्पादित जीरा का अच्छा भाव दिलवाने के लिए किसानो व व्यापारियों के बीच तालमेल बैठाकर मंडी से अधिक भाव में बिकवाकर नागौर का नाम जैविक जीरा उत्पादन में रखना है। डॉ. बीएल मीणा कालीकट केरला ने बताया कि गुणवत्ता की पैदा करके हमारे देश में

मूंडवा। कार्यशाला में किसानों को जानकारी देते विशेषज्ञ। -फरजाना देवड़ा

फैल रही बीमारियों से बचा जा सकता हैं। एम व होननूर स्पाइस बोर्ड जोधपुर ने किसानों को प्राकृतिक खेती करके खेती में हो रहे खर्च को कम करना व पैदावारी बढ़ाने के लिये तकनीकी की सहायता लें।डॉ.एमएल मेहरिया एग्रीकल्चर विशवविद्यालय जोधपुर ने किसानों से आग्रह किया कि बीज का चुनाव अपने ही खेत का करे। कार्यकम अधिकारी डॉ. कृष्ण कांत ने बिना कीटनाशी का जीरा उत्पादन करने वाले कार्य को विस्तार से समझाया। प्रशांत रंगा टीम लीडर अम्बुजा सीमेंट फाउंडेशन ने बताया कि कार्य को बढ़ावा देना हमारा प्रयास रहेगा। कार्यक्रम में ईनाणा व मुंडवा के किसानो ने भी अपनी बात रखी। अंत में स्वनी स्पाइस, आईटीसी व जयंती स्पाइस ने अपने बात रखी जो के गुणवत्ता का उत्पादन को विदेश में बेचती है।इस दौरान प्रहलाद राम, सहदेव राम, हरीराम व बजरंग राम आदि उपस्थित रहे।

जीरा फसल के अच्छे उत्पादन के लिये कार्यशाला आयोजित

भास्कर संवाददाता | मूण्डवा

अम्बुजा सीमेंट फाउंडेशन मारवाड़ मुंडवा में बिना कीटनाशी के जीरा उत्पादन डीएएसडी प्रयोजना के हितधारक (स्टेकहोल्डर) के साथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि डॉ. इस .एन. सक्सेना डायरेक्टर एनआरसीएसएस अजमेर ने ईनाणा गांव में चल रहे कार्यक्रम बिना कीटनाशी के जीरा उत्पादन में किसानों द्वारा किए जा रहे कार्य कि प्रशंसा कि तथा उत्पादित जीरा का अच्छा भाव दिलवाने के लिए किसानों व व्यापारियों के बीच तालमेल बैठाकर मंडी से अधिक भाव में बिकवाकर नागौर का नाम जैविक जीरा उत्पादन में रखना है। डॉ. बी एल मीणा कालीकट केरला ने संबोधित किया। एमवहोननुर स्पाइस बोर्ड जोधपुर ने किसानों को प्राकृतिक खेती करके खेती में हो रहे खर्च को कम करना व पैदावारी बढ़ाने के लिए तकनीकी की सहायता लेंवे। डॉ.एम. एल. मेहरिया एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय जोधपुर ने संबोधित किया। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कृष्णकांत ने संबोधित किया। प्रशांत रंगा टीम लीडर ने बताया कि कार्य को बढ़ावा देना हमारा प्रयास रहेगा। कार्यक्रम में ईनाणा व मुंडवा के किसानों ने भी अपनी बात रखी। प्रह्लादराम, सहदेवराम, हरीराम व बजरंगराम आदि मौजूद रहे।

आयोजन • किसानों को जीरा करेगा निहाल, अर्जुनपुरा में खेत में पड़ा जीरा खरीदा, मंडी भाव से 20% अधिक मुनाफा

मसाला बोर्ड व आइसीएआर-एनआरसीएसएस की उपस्थिति में जीरे की थ्रेसिंग का प्रदर्शन

भास्कर संवाददाता | डीडवाना

जिले के किसान अब जीरे की खेती से मालामाल होने वाले हैं। इसका परिणाम शुक्रवार को जिले के निकटवर्ती गांव अर्जुनपुरा में देखने को मिला।

जहां किसानों के साथ जैविक खेती के प्रदर्शन को लेकर कृषि विभाग के अधिकारियों व मसाला बोर्ड के कार्मिकों ने खेतों की यात्रा करते हुए गांव के किसानों से विस्तृत चर्चा की। इस दौरान गांव अर्जुनपुरा में मसाला बोर्ड व आइसीएआर-एनआरसीएसएस की उपस्थिति में नए अनुदानित थ्रेशर द्वारा जीरे की थ्रेसिंग का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान भारत के मसाला बोर्ड और आईसीएआर-एनआरसीएसएस जोधपुर की उपस्थिति में बायोटेक किसानों व एसआरके उद्योगों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। इसके बाद अधिकारी गांव डींगसरा पहुंचे जहां बायोटेक किसान प्रदर्शन क्षेत्रों का दौरा करते हुए किसानों के साथ बातचीत की।

खेंविसर. क्षेत्र में जीरे की फसल के बारे में जानकारी देते हुए अधिकारी।

आईपीएम जीरा उत्पादन को लेकर शुक्रवार को निकटवर्ती गांव अर्जुनपुरा में दक्षिण एशिया जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र के डॉ. भागीरथ चौधरी ने उदघाटन भाषण देते हुए जीरे की खेती के लिए उन्नत तकनीक के बारे में जानकारी प्रदान की। इस प्रकार कार्यक्रम के अंत में जीरे की थ्रेसिंग का कार्य शुरू किया गया। इसके बाद एसआरके मसाला बोर्ड से आए श्याम जानू ने मौके पर जीरे का सैंपल लेकर किसान हरीराम से मंडी भाव से 20 प्रतिशत प्रीमियम पर 16 हजार रुपए प्रति क्विंटल के भाव से जीरा खरीदा। इस दौरान किसानों ने बताया कि दक्षिण एशिया जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र के डॉ. भागीरथ चौधरी के प्रयास से किसानों को नई दिशा मिली है। जानकारी के अनुसार गांव अर्जुनपुरा सहित आसपास के क्षेत्र में करीब दस किसानों को इस बार लाभान्वित किया गया है।

जीरा करेगा मालामाल

इस मौके पर डॉ. संदीप अगाले ने कहा कि अब तक जीरे की फसल किसानों के लिए खतरा ही साबित होती थी क्योंकि मौसम की मार के साथ साथ ओलावृष्टि और बारिश जीरे की फसल को बर्बाद कर देती थी, लेकिन अब जैव प्रोद्योगिकी के माध्यम से किसानों को सभी समस्याओं से मुक्त कर जीरे की फसल से उनको मालामाल कर देगी। दक्षिण एशिया जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र के डॉ. भागीरथ चौधरी ने बताया कि जीरे का गोल्डन रंग नागौरी जीरे की पहचान है। इस प्रकार का रंग कहीं नहीं है।

फिर से जीवित होगा खेती का व्यवसाय

इस मौके पर गांव के कई बुजुर्ग किसानों ने बताया कि कई वर्ष पूर्व अच्छी पैदावार होती थी, लेकिन अब पानी में लवणता व फसलों में लगने वाले अनेक प्रकार के रोगों से किसान खेती से ऊब चुके है। इस दौरान कई किसानों ने बताया कि विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों के उपयोग से उत्पादन दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है। वहीं बाजार में जैविक दवाईयां नहीं मिलने से फसलों को बीमारी से बचाने के लिए रासायनिक दवा का उपयोग करना भी मजबूरी है। जिस पर डॉ. मुरलीधर मीणा ने बताया कि फसलों में जैविक दवा का उपयोग किया जाए तो किसान लाभान्वित होंगे।

नागौर पत्रिका 10 राजस्थान पत्रिका
नागौर, बुधवार, 17 मार्च, 2021
patrika.com

निर्यातकों के साथ जैविक जीरा उत्पादन करने वाले किसानों की बैठक : कृषि वैज्ञानिकों ने की किसानों की मार्केटिंग

गुणवत्ता परीक्षण के बाद विदेशों में बिकेगा ईनाणा का जैविक जीरा

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

मूण्डवा. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र से जुड़कर जैविक जीरा का उत्पाद करने वाले किसानों की उपज को अच्छे भाव मिले तथा नागौर के साथ-साथ मारवाड़ अंचल को विशेष पहचान मिले इसके लिए मूण्डवा में कार्यशाला आयोजित की गई।

इस वर्ष ईनाणा के 25 किसानों ने जैविक जीरा की प्रायोगिक खेती की है। विदेशों में इसका निर्यात करने वाली बड़ी कंपनियों के प्रतिनिधियों की मूण्डवा में जैविक जीरा उत्पादन करने वाले किसानों के साथ बैठक में कृषि वैज्ञानिक उपस्थित रहे। जिन्होंने जैविक उत्पाद की मार्केटिंग करते हुए कहा कि मारवाड़ अंचल का जीरा गुणवत्ता में सर्वश्रेष्ठ है। अब जैविक उत्पाद होने से इसकी महत्ता और बढ़ गई है।

उन्होंने कहा कि रसायन मुक्त कृषि उत्पाद स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद है वहीं किसानों की आमदनी बढ़ाने में कारगर साबित हो रहे हैं। कई देशों में इनकी बड़ी मांग है। हमारे साथ जुड़े किसानों ने इस बार जैविक खेती के लिए जो प्रयोग किया वह प्रशंसनीय तथा प्रेरक है। यह विचार राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र (तबीजी) के निदेशक जैलेन्द्र सक्सेना ने व्यक्त किए। वे मंगलवार को मूण्डवा के अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन परिसर में आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने तबीजी के वैज्ञानिकों, अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन तथा अभियान से जुड़े किसानों की टीम भावना की सराहना की। उन्होंने जैविक जीरे की बिक्री से किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए निर्यात करने वाले व्यापारियों से किसानों की सीधी बातचीत को अच्छे भाव दिलवाने में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास बताया।

मूण्डवा में जीरा उत्पादक किसानों से रुबरु होते कृषि वैज्ञानिक व निर्यातक।

मसाला बोर्ड के सहायक निदेशक एसवाई इनुदर ने कहा कि हमारा देश बीजीय मसाला उत्पादन में तो समृद्ध है लेकिन निर्यात में हम पीछे रह जाते हैं। गत वर्ष बीजीय मसालों के निर्यात पर दृष्टि डाले तो हमारे देश से चार हजार करोड़ का निर्यात हुआ। जबकि उत्पादन का केवल दस से तेरह प्रतिशत ही विदेशी निर्यात की गुणवत्ता में खरा पाया गया। मसालों का निर्यात अधिक होगा तो किसानों को लाभ अधिक मिलेगा। इसके लिए गुणवत्ता का ध्यान रखना सबसे जरूरी है।

सुपारी एवं मसाला निदेशालय कालीकट केरल के सहायक निदेशक बीएल मीणा ने कहा कि जीरा की जैविक खेती के लिए तबीजी में जो प्रयोगशाला स्थापित की गई उसके परिणाम सार्थक रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत किसानों की आय दुगुनी करने के लिए कृषि मंत्रालय प्रयासरत है। मसाला विकास निदेशालय इसके लिए तत्पर है। किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज मिले इसके लिए कभी आर्थिक तंगी नहीं आएगी। तबीजी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.कृष्णकांत ने कहा कि ईनाणा में जीरा की जैविक खेती के लिए जो प्रयोग किया वह सार्थक रहा है। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के प्रोफेसर डॉ.एमएल मेहरिया ने कहा कि भारत में जीरा का उत्पादन गुजरात व राजस्थान में होता है। जिसका एक ही बीज जीसी-4 ही है। राजस्थान के केवल मारवाड़ अंचल में ही जीरा का उत्पादन होता है। उसमें नागौर अंचल सबसे आगे है।

बड़े खरीदारों में शामिल स्वनी स्पाईस, आईटीसी तथा जयंति स्पाईस के प्रतिनिधियों ने कहा कि जीरे का लेब टेस्ट परिणाम के अनुसार ही अलग-अलग देशों में निर्यात किया जाता है। यूएसए के मानकों पर खरा उतरने वाला जीरा सबसे अधिक भाव ले सकता है। इसलिए गुणवत्ता से कभी समझौता न करें। इस दौरान अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन के टीम लीडर प्रशांत रंगा ने कहा कि अब हमारा ध्यान किसानों को प्रशिक्षण के साथ उनकी आमदनी बढ़ाने पर रहेगा। किसानों को सीधा निर्यातकों से जोड़ेंगे। अमरीका में जैविक जीरा की बिक्री कर धाक जमाने वाले प्रगतिशील किसान प्रहलादराम ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस वर्ष उसके जीरे की 35 हजार रुपए प्रति क्विंटल से खरीद तय हो गई है। जिसकी अधिकांश राशि उसके खाते में अग्रिम जमा हो गई। इस दौरान किसानों ने भी अपने अनुभव साझा किए। फाउंडेशन के कृषि अधिकारी गब्बर सिंह ने मंच संचालन किया।

सुझाव भारतीय बीज अनुसंधान संस्थान अजमेर से किसानों को उपलब्ध कराया बीज

आत्मनिर्भरता को किसान करें मसाले की खेती

सुशील गुप्ता • महुली (सोनभद्र)

आधुनिकता की चमक दमक में पड़कर जहां लोगों का रूझान खेती किसानी से कम होता जा रहा है वहीं दुद्धी के उपजिलाधिकारी ने किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नई पहल की शुरुआत की है। किसानों की आय बढ़ाने व खेती की आधुनिक चीजों को अपनाने के लिए एसडीएम जागरूक कर रहे हैं। मसाले की खेती की तरफ चार किसानों का रुझान बढ़ा है। इन किसानों को एसडीएम ने भारतीय बीज अनुसंधान संस्थान अजमेर से बीज मंगवाकर उपलब्ध कराया है।

किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार तमाम जतन कर रही है। दुद्धी उप जिलाधिकारी रमेश कुमार ने दुद्धी ब्लाक के घिवही गांव के चार किसानों को मसाले की खेती से जोड़ कर आत्मनिर्भर बनाने का बीणा उठाया है। उनकी इस नई पहल से किसान भी गदगद हैं और घिवही गांव में चारों किसानों ने ट्रायल के तौर पर दो-दो वर्ग मीटर की एक-एक क्यारी में जीरा, अजवाइन, मंगरैल, कस्तूरी मेथी, सौंफ, सलरी, दालचीनी, तेजपत्ता व हिंग की खेती की है। इन मसालों की खेती अक्टूबर व नवंबर में की गई है। घिवही गांव के प्रगतिशील किसान गौरीशंकर कुशवाहा, रमेश कुमार, सुशील कुमार यादव व उमेश ने अपने खेतों में मसाले की खेती की है। हिंग व तेजपत्ता के पौधे बड़े हो गए हैं

दुद्धी ब्लाक के घिवही गांव में किसानों द्वारा की गई अजवाइन की खेती • जागरण

खेती बढ़ी तो उपलब्ध कराएंगे बाजार

उपजिलाधिकारी रमेश कुमार ने कहा कि दुद्धी क्षेत्र में मसाले की खेती की अपार संभावनाएं हैं। अभी तो यह बानगी है। अगर किसान मसाले की खेती से जुड़ें तो इसमें अच्छी आमदनी कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसानों की हर संभव मदद कर खेती को बढ़ावा देने के साथ ही उन्हें स्थानीय बाजार भी सुविधाजनक ढग से मुहैया कराया जाएगा।

कवायद

- मसाले की खेती में समस्या आने पर एसडीएम से करते हैं संपर्क
- दुद्धी ब्लाक के घिवही गांव के चार किसानों ने शुरू की खेती

एसडीएम ने राजस्थान से मंगाया उन्नतशील किस्म के बीज

दुद्धी ब्लाक के घिवही गांव के किसानों को उपजिलाधिकारी रमेश कुमार ने मसाले की खेती कर आत्मनिर्भर बनने की सलाह दी। जिसे क्षेत्र के चार किसानों ने अपनाया है। शुरूआत में उत्तम गुणवत्ता के बीजों का अभाव होने से किसान हीलाहवाली कर रहे थे लेकिन एसडीएम ने हार नहीं मानी और भारतीय बीज अनुसंधान संस्थान अजमेर राजस्थान से पत्राचार एवं दूरभाष पर संपर्क कर बीज की उपलब्धता करवाई और कृषि वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों के निर्देशन में प्रयोग के तौर पर इस क्षेत्र के कुछ किसानों से मसाले की खेती की शुरुआत कराई।